Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2019

मानव का विकास और विस्थापन

डॉ. बजरंग चौहान [1]

[1] ग्राम- मान्दुली, पोस्ट - खारिखाना जिला- होजाई , असम, पिन-782446,

ABSTRACT:

KEYWORDS:

विस्थापन मानव जीवन की एक बहुत बड़ी त्रासदी है। यह ऐसी भयावह त्रासदी है जिसमें मनुष्य बाह्य और आंतरिक रूप से अस्थिर होकर टूट जाता है। वर्तमान समय में विस्थापन ज्वलंत सामाजिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। जिसका प्रभाव भारत के अलावा दुनिया के विभिन्न देशों में भी देखा गया है। इसके कारण मनुष्य की बसी-बसाई दुनिया बिखर जाती है। विस्थापन की शुरूआत मानव सभ्यता के विकास के साथ ही हुई थी।

आदिम युग में मनुष्य अपना जीवन-यापन भटकते हुए करता था। मूलरूप से मनुष्य 'घुमंतू', 'बंजारा' और 'खानाबदोश' की तरह जीवन व्यतीत करता था। रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य को काम-काज करना पड़ता है। आदिम युग में भोजन आसानी से एक जगह नहीं मिलता था। इसके लिये उसे दर-दर भटकना पड़ता था। पेड़-पौधों आदि से प्राप्त कंद-मूल, फल और पशुओं का माँस खाकर लोग गुजर-बसर करते थे। इसके लिए उन्हें पशुओं का शिकार भी करना पड़ता था। अपनी इसी जरूरत के चलते मनुष्य ने विभिन्न तरह के औजारों का निर्माण किया और इसके प्रयोग का कौशल भी सीखा। इस तरह से मानव-सभ्यता का विकास प्रारम्भ हुआ।

प्राक्-ऐतिहासिक युग में 'आग' और 'धातु' की खोज से लेकर विभिन्न तरह के औजारों तथा 'पहिए' के आविष्कार तक 'नवपाषाण युग' आते-आते मानव की सभ्यता बहुत हद तक विकसित हो गई थी। भोजन-संग्रह की तलाश में घूमकर जीवन-व्यतीत करते-करते मनुष्य ने मिट्टी के बर्तन, और छोटे-मोटे कृषि और शिकार करने के औजार बनाना सीख लिया। समय के साथ पशु-पालन और कृषि-कार्य सीखने के बाद जब मनुष्य ने अपना घुमक्कड़ जीवन त्याग कर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ किया, तब उसकी प्रगति और की गति औरतीव्र हो गई। भोजन-संग्रह के स्थान पर अब वह भोजन-सामग्री पैदा करने लगा। बेहतर जीवन-यापन के लिए मनुष्य ने अब स्थायी रूप से कृषि कार्य करना प्रारम्भ किया; किन्तु दिन-प्रति-दिन बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण एक सीमित दायरे में रहकर गुजर बसर करना मुश्किल होने लगा। फलस्वरूप मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाने की आवश्यकता हुई।

यह कहा जा सकता है कि सभ्यता के विकास की कहानी के साथ ही 'विस्थापन' की कहानी भी शुरू हुई। आदिम युग से ही विस्थापन की प्रक्रिया चली आ रही है। जहाँ पर मनुष्य को रहने लायक सुरक्षित वातावरण दिखाई दिया वह वहाँ जा बसा। मानव सभ्यता का इतिहास और विस्थापन के बीच प्राचीन काल से ही गहरा संबंध है। सबसे पहले विस्थापन कब हुआ यह जान पाना कठिन है? किन्तु यह साफ है कि विस्थापन की प्रक्रिया की शुरूआत सबसे पहले घुमंतु समुदायों द्वारा ही हुई। 'घुमन्तु' समुदायों का एक जगह ठहरना और वहाँ कुछ दिन रहकर उस जगह को त्याग देने की प्रक्रिया का नाम ही विस्थापन है। अनादि काल से चली आ रही विकास की विभिन्न प्रक्रिया ने ही विस्थापन की नींव रखी है। अत: विस्थापन के मूल में मुख्य रूप से भौतिक विकास ही रहा है।

बदलते समय के साथ विस्थापन के स्वरूप में भी लगातार परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान समय में विस्थापन सम्पूर्ण मानव जाति और दुनिया के लिए एक संकटका रूप धारण करता जा रहा है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी, भूमंडलीकरण, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, भौगोलिक आदि विस्थापन के महत्त्वपूर्ण कारण हैं। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, विज्ञान तकनीकि का बढ़ता प्रकोप, तीव्र गति से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन,विश्व के अनेक देशों में हो रहे आई.एस.आई जैसे आतंकवादी संगठनों के आक्रमण और विकास परियोजनाओं आदि के कारण विस्थापन की गति में बढ़ोत्तरी हुई है। विस्थापन के विविध दर्द को लोगों ने सदियों से झेला है। भारत में व्यापक स्तर पर विस्थापन की शुरूआत आजादी के बाद हुई। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बँटवारे ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय को सांप्रदायिकता की आग में झोंक दिया। इन सांप्रदायिक दंगों में लाखों की संख्या में लोग मारे गए और अपना घर-वार छोड़कर पकिस्तान से भारत और भारत से पाकिस्तान विस्थापित हुए। आजादी के बाद हिन्दुस्तान के विकास के लिए अनेक परियोजनाएँ बनाई गई और इन परियोजनाओं से सबसे अधिक आदिवासियों का विस्थापन हुआ।

'विस्थापन' का शाब्दिक अर्थ है- एक स्थान को छोड़कर दूसरे

स्थान की तरफ गमन करना अर्थात् अपने मूल स्थान को छोड़कर दूसरे आश्रय या आसियाने की तलाश में निकलना और वहाँ जाकर बस जाना। सामान्य अर्थ में कहा जाए तो अपने मूल से उखड़ कर इधर-उधर बिखर जाना ही विस्थापन है। मनुष्य अपने जन्म स्थान और निवास स्थान को छोड़कर नये स्थान की तरफ़ जाते हैं, तो उस प्रक्रिया को हम 'विस्थापन' कहते हैं।

विस्थापन में मनुष्य एक सीमा को ही पार नहीं करता, बल्कि अपना सब कुछ न्यौछावर और छोड़ कर जाता है। ऐसी स्थिति में यह जीवन के समस्त पक्षों को प्रभावित करता है। खान-पान, आचार-विचार, सांस्कृतिक धरोहर आदि जैसे पक्षों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। विस्थापित हुए लोगों को सामाजिक समायोजन की विकट समस्या से गुजरना पड़ता है। नए वातावरण में अपने आपको समायोजित करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष भी करना पड़ता है।

विस्थापन को अलग-अलग तरह से पारिभाषित किया गया है जो इस प्रकार है-

1) विकिपीडिया के अनुसार, "Human migration is the moment by people from one place to another with the intention of settling in the new location."[i] (विस्थापन एक जगह से दूसरी जगह जाने की ऐसी प्रक्रिया है जिस में लोग नई जगह पर बसने की इच्छा रखते हैं।)

2) चिन्मय मिश्रा, "विस्थापन का मतलब, जिन्दगी का उजड़ जाना है।"[ii]

3) रुबी एलसा जेकब- "विस्थापन मूलत: एक व्यक्ति या समूह द्वारा जोखिमों और हित-लाभों को तोलने के बाद कम उपयुक्त वातावरण से अधिक लाभदायक स्थान की ओर गमन करने का परिमेय निर्णय है।"[iii]

4) शब्द कोश के अनुसार- "जो कहीं स्थापित या स्थित हो उसे वहाँ से हटना या किसी स्थान पर बसे हुए लिगों को कहीं से बलपूर्वक हटाना और वह जगह उनसे खाली करा लेना ही डिसप्लेस्मेंट या विस्थापन है।[iv]"

5) हिन्दी शब्दसागर के अनुसार- "विस्थापन दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया है।"[v]

6) प्रो. अब्दुल अलीम नाजिया कमाल के अनुसर, "विस्थापन का अर्थ विशेष परिस्थितियों के कारण एक स्थान से उजड़कर दूसरे स्थान पर स्थापित होना है।"[vi]

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि जब लोग अपनी बनी- बनाई दुनिया से उजड़ जाते हैं, तो उसे ही हम विस्थापन कहते हैं। अर्थात् जब लोग अपने मूल से उखड़ कर दूसरे स्थानों की तरफ गमन करते हैं और अपने उजड़े हुए जीवन को बसाने के लिए अपने पूर्वजों की स्नेहिल छाया से बिछुड़ जाते हैं, तब वे विस्थपन के शिकार होते हैं।

विस्थापन के विविध रूप

विस्थापन मानव जीवन की त्रासदी है। यह ऐसी भयावह त्रासदी है जिसमें मनुष्य बाह्य और आंतरिक रूप से अस्थिर होकर टूट जाता है। उसकी बसी-बसाई दुनिया बिखर जाती है। जैसे-जैसे मानव सभ्यता के क्रमिक विकास की गति तीव्र हुई वैसे विस्थापन के स्वरूपों में भी परिवर्तन आया। विस्थापन महज़ बलात् न होकर अब ऐच्छिक भी होने लगा है।

जो लोग अपनी इच्छा से विस्थापित होते हैं, स्वैच्छा से विस्थापित होने वाले अपने निर्णय से खुश होते हैं और दूसरी जगह बसने में भी कामयाब होते हैं। मजबूरी में या बलपूर्वक विस्थापित लोगों की स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। अपने घर,आंगन और देश को छोड़ने की पीड़ा उन्हें मानसिक रूपसे तोड़ देती है। उनके मन में हमेशा पुरानी मिट्टी की यादें आती हैं और वहाँ लौटने की इच्छा होती है। वर्तमान समय में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी,भूमंडलीकरण, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, भौगोलिक आदि विस्थापन के महत्त्वपूर्ण कारण हैं। विस्थापन के प्रमुख रूप निम्नांकित हैं।

ऐच्छिक और बलात् विस्थापन: विस्थापन के दो प्रमुख रूप हैं ऐच्छिक और बलात् विस्थापन । जब लोग अपनी इच्छा से अपने सुख सुविधाओं को ध्यान में रखकर बेहतर जीवन की तलाश में विस्थापित होते हैं, तो उसे हम ऐच्छिक विस्थापन कहते हैं। भारत के पढ़े-लिखे मध्यवर्ग का एक बहुत बड़ा हिस्सा विदेशों में जाकर अपनी इच्छा से सेवा प्रदान कर रहा है, जिसमें बहुत सारे लोग वहाँ प्रवासी भारतीय के रूपमें बस भी गये हैं।

बलात् विस्थापन अपनी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक या मजबूरी में होता है, जब लोगों को जबरन अपने पूर्वजों की स्नेहिल छाया छोड़नी पड़ती है, तो ऐसे विस्थापन को बलात् विस्थापन कहते हैं। इस तरह का विस्थापन कई कारणों से होता है, यथा प्राकृतिक आपदा के चलते जैसे बाढ़, भूकम्प, सूखा, समुद्री तूफान आदि धार्मिक कारणों से उभरे साम्प्रदायिक दंगे, जातीय हिंसा, गुटबाजी आदि। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारत-पाकिस्तान विभाजन को माना जा सकता है। राजनीतिक-कूटनीतिक कारणों से जैसे युद्ध, आतंकवादी हिंसा, नक्सल विरोधी सेना अभियान आदि। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय व्यापक स्तर पर हिंसक घटनाएँ हुईं, जिसमें लाखों लोग मारे गए या अपना सब कुछ छोड़ कर विस्थापित हुए। दुनिया के कई देशों में आयेदिन इस तरह की घटनाएँ होती रहती हैं जिसमें इजराइल, फिलिस्तीन, लीबिया, अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान आदि प्रमुख हैं। आजादी के बाद भारत के अंदर पूर्वोत्तर के राज्यों में आतंकवाद और कश्मीर में धार्मिक कट्टरवादों के चलते सैंकड़ों बार लोगों को विस्थापित होना पड़ा है। जिसमें कश्मीर के विस्थापितों की स्थिति बहुत नाजुक बनी हुई है। आज भी वे दिल्ली में बने शरणार्थी शिविरों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

स्थायी और अस्थायी विस्थापन: विस्थापन की दो स्थितियाँ हैं, एक स्थायी और दूसरी अस्थायी। स्थायी विस्थापन में विस्थापित हुए लोग उस जगह को छोड़कर पूर्ण रूप से चले जाते हैं, वहाँ से पुन: वापस आने की सम्भावना बहुत कम या न के बराबर रहती है। दूसरी तरफ़ अस्थाई विस्थापन ठीक इसके विपरीत है। इसमें पुन: वापस आने की संभावना बनी रहती है या कुछ वर्षों बाद लोग आ भी जाते हैं।

भारत या दुनिया के अनेक प्रांतों में गए लोगों में मजदूर, कारीगर, डॉक्टर, इंजीनियर, आदि ऐसे हजारों की संख्या में लोग मिलेंगे जो अस्थाई रूप से वहां कार्य कर रहे हैं। जिनकी वापसी पूर्व निर्धारित है।

ऐसे ही लोगों में से कुछ लोग वहाँ जब स्थाई रूप से रच बस जाते हैं तब उन्हें हम प्रवासी भारतीय कहते हैं।

आजादी के पूर्व या बाद की स्थिति को यदि हम देखें तो जमींदारी प्रथा की मार झेल रहे किसानों, मजदूरों और निम्न वर्ग के लोगों का व्यापक स्तर पर विस्थापन हुआ। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, बंगाल आदि राज्यों के बहुत सारे लोग देश के अलग-अलग राज्यों में जा बसे। इनकी संख्या बढ़कर अब कई करोड़ हो गयी है। वे जहाँ भी गये वहीं के बनकर रह गये। अपने कठिन परिश्रम और मेहनत के दम पर दुनिया के हर कोने में इन्होंने अपना परचम लहराया है।

विकास से प्रेरित विस्थापन : विज्ञान के कारण विकास की गति में तेजी आई है। मनुष्य दिन-दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। विज्ञान के विकास से जन-जीवन में क्रांति आई है। इसने बड़े- बड़े उद्योगों को जन्म दिया तथा यातायात, संचार और श्रम के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की है। विज्ञान के साधनों के कारण आज पूरा विश्व एक कुटुंब बन गया है। दुनिया की घटनाएँ मिनटों-सैकेण्डों में आग की तरह फैल जाती हैं। दूरदर्शन, रेडियो, दूरभाष यंत्र, इंटरनेट, उपग्रह-संचार आदि से सारा विश्व मानो एक सूत्र में बँध सा गया है।

दूसरी तरफ सबसे बड़ा खतरा, पर्यावरण प्रदूषण का है। इसके कारण आज शहरों में साँस लेना दूभर हो गया है। हर जगह गंदगी और बीमरियों का साम्राज्य-सा फैल गया है। कृत्रिम खादों, दवाईयों के कारण भूमि से उत्पन्न फसलें दूषित हो गई हैं। विज्ञान के बढ़ते संसाधनों, सुविधाओं, रासायनिक हथियारों, परमाणु बमों आदि से दुनिया को बहुत बड़ा खतरा है।दूसरी तरफ़ विकास के लिए चलाए जाने वाले विकास परियोजनाओं के चलते व्यापक स्तर पर लोगों को विस्थापित किया गया है। विविध परियोजनाओं में यथा- बाँधों का निर्माण, रेल, सड़क निर्माण, शहरीकरण, सैन्य प्रतिष्ठानों का निर्माण,अवैध खनन, हवाईअड्डों का निर्माण, औद्यौगिक संयंत्रों का निर्माण, हथियार परीक्षण स्थान भूमि अधिग्रहण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। जिसके कारण लाखों आदिवासियों और किसानों को बेघर होना पड़ा है।

भारत में विस्थापितों की स्थिति का पता विश्व अधिकोष से चलता है। इसके अनुसार-"भारत में विकास योजनाओं से विस्थापित हुए लोगों की संख्या लगभग साढ़े तीन करोड़ है जो पूरे विश्व की तुलना में सबसे अधिक है।"[vii] इस कथन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में विस्थापन कितनी बड़ी त्रासदी है। आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, राजनैतिक दृष्टि से लोग कमजोर हो जाते हैं। इन्हें स्थायी रूप से दरिद्रता का सामना करना पड़ता है जिसके चलते अपमानजनक जीवन बिताने पर मजबूर होते हैं। सबसे निराशाजनक बात यह है विस्थापित लोगों को हेय नज़रिये से देखा जाना। कभी कभार तो चिड़ियों के बीच में चमगादड़ वाली स्थिति भी पैदा होती है। उनके लड़कियों के साथ छेड़खानी, बलात्कार, चोरी, डकैती आदि जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

विकास को तीव्र गति से अंजाम देने के लिए बड़ी तादाद में भूमि अधिग्रहण किया जा रहा है। बड़ी-बड़ी कम्पनियों, बिल्डरों, दलालों आदि के द्वारा किसानों की जमीन को कम दाम पर खरीद कर, खेती योग्य भूमि पर शहरीकरण की नींव रखा जाना विस्थापन के सबसे क्रूर रूपों में से एक है।

भारत के विकास परियोजनाओं में सबसे ऊँचा स्थान बाँध निर्माण का है।भारत में पीछले पचास वर्षों में लगभग 3300 बाँधों का निर्माण किया गया और हजारों की संख्या में निर्माणाधीन हैं। "दुनिया भर के बाँध निर्माताओं में तृतीय स्थान भारत का हैभारतीय विशेषज्ञों के अनुसार मात्र बाँध-निर्माण से विस्थापित लोगों की संख्या दो से चार करोड़ के बीच है।"[viii] इसलिए बाँध निर्माण हमेशा प्रतिवाद और विरोध का विषय बना रहा है। प्रमुख बाँध परियोजनाओं में- भाखड़ा नांगल परियोजना- सतलुज नदी, व्यास परियोजना- व्यास नदी, हीरा कुंड बाँध -महानदी, नागार्जुन सागर- कृष्णानदी, शारदा परियोजना- शारदा नदी, पंचेत बाँध-दामोदर नदी, गंगा सागर परियोजना- चम्बल नदी, सरदार सरोवर परियोजना- नर्मदा नदी, राणा प्रताप सागर परियोजना- चम्बल नदी, दामोदर घाटी परियोजना- दामोदर नदी, चम्बल परियोजना- चम्बल नदी, तुंगभ्रदापरियोजना- तुंगभ्रद्र नदी, कोशी परियोजना-कोशी नदी, काकड़ापारा परियोजना- ताप्ती नदी, टिहरी बाँध परियोजना- भागीरथी नदी आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान समय में जमशेदपुर, खूंटी, गुमला, हजारीबाग, रांची (झारखंड), सुंदरगढ़ (ओडिशा),कटनी, उमरिया, सतना (मध्यप्रदेश), महेंद्रगढ़ और रोहतक (हरियाणा) आदि जिलों में चलाए जा रही विभिन्न विकास परियोजनाओं के कारण लाखों लोगों को अपना सब कुछ छोड़ना पड़ा है। विरोध के स्वर भी जोर-शोर से उठ रहे हैं। मुवाबजे के नाम पर दलालों की लूट और सरकार की गलत नीतियाँ ने इन्हें कहीं का नहीं छोड़ा है। खासतौर पर डूब क्षेत्र में आने वाले किसान और आदिवासियों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। ज्यांग अदिवासियों का अस्तित्व खतरे में है। "ज्यांग अदिवासियों के छप्पन गावों में से अब मात्र उन्नीस बचे है।"[ix] आदिवासी समाज के लिए यह बहुत ही चिंता की बात है। आदिम आदिवासियों की स्थिति तो और ही भयानक हैं। 'ग्लोबल गांव के देवता' में रणेन्द्र ने भी झारखंड के बरवे जिले में बसे बोरिजिया, बिरहोर, कोरबा आदिवासियों के निरंतर घटने पर चिंता व्यक्त किया है।

पिछले दस-पंद्रह वर्षों में विस्थापन की गति तिव्र हुई है। धीरे-धीरे विस्थापन की समस्या विकराल रूप धारण करता जा रहा है। 'विस्थापन बढ़ाता विकास' में भरत डोगरा अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते है कि "बड़े पैमने पर विस्थापन व कृषि भूमि का छीनना किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। आज बड़े पैमाने पर विस्थापन व कृषि भूमि छीनने की नीतियों को चुनौती देने की जरूरत है।"[x]

अंतरराष्ट्रीय विस्थापन: विस्थापन के प्रमुख रूपों में अंतरराष्ट्रीय विस्थापन भी महत्त्वपूर्ण है। एक देश से दूसरे देशों में जाकर बसना यह विश्वव्यापी कार्यकलाप है, जिसके पीछे मूलरूप से आर्थिक या सामाजिक कारण रहते हैं। जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिएयह मजबूरी में उठाया गया कदम है। लोग अपने मूल निवास स्थान अपने घर, परिवार और अपने देश से अलग होकर अन्य देशों के नये परिवेश में चले जाते हैं।

प्रवासी भरतीयों के जीवन पर आधारित हिन्दी साहित्य में अनेक उपन्यास लिखे गए हैं। गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया', अभिमन्यु अनत का 'लाल पसीना' और 'और पसीना बहता रहा', रवीन्द्र

कालिया का 'ए.बी.सी.डी' आदि। 'पहला गिरमिटिया' गिरमिटिया मजदूरों की यातना-भरी जीवन पर आधारित हैं। 'लाल पसीना' उन भारतीय मज़दूरों के संघर्ष की कहानी है जो अपने खून और पसीने से मॉरीशस की चट्टानों को उपजाऊ मिट्टी में परिवर्तित करते हैं और उसके बदले में उन्हें अपमान और प्रताड़ना मिलती है। रवीन्द्र कालिया द्वारा लिखे गये 'ए.बी.सी.डी' शीर्षक उपन्यास में ऐसे ही एक प्रवासी भारतीय परिवार की कथा है। इसके अनुसार विदेशों में वर्षोंतक रहने के बाद भी वहाँ के परिवेश में उनके बच्चे, तो घुल-मिल जाते हैं किन्तु यहाँ के संस्कार में पले-बढ़े लोगों को वहाँ की संस्कृति अपसंस्कृति लगती है। इसलिए यहाँ की संस्कृति को जीवित रखने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। सामाजिक समायोजन के लिए उन्हें काफी समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं। ऐसे घुटन भरे माहौल में वे मजबूरी बस रहते हैं, इस प्रतीक्षा में कि आर्थिक उन्नति होने के बाद अपने देश वापस लौट जाऐंगे। भारत में तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि के कारण बेरोजगारी की समस्या आज भी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। भारत में वापस लौटकर बेरोजगार होने की आशंका से प्रत्येक प्रवासी भारतीय मजबूरन विदेशों में रहने के लिए बाध्य हैं। यही कारण है कि "विश्व के लगभग 136 देशों में भारतवंशी निवास करते हैं और इनकी संख्या का अनुमान लगभग दो करोड़ है।"[xi]

जिस देश में प्रवासी भारतीय मौजूद हैं वहाँ की आर्थिक स्थिति काफी उन्नत है। प्रवासी अपने आय के 87 प्रतिशत धन वहाँ कर के रूप में या जीवन निर्वाह के लिए उपयोग में लाते हैं और मात्र 13 प्रतिशत प्रेषित रकम के रूप में अपने देश भेजते हैं। उषाराजे ने प्रवासी के शहरी संवेदना को महसूस करते हुए लिखा है- "प्रवासी वे कलमें हैं जो अपने पेड़ से कटी हुई टहनियाँ होने के बावजूद बरसों-बरस किसी और मिट्टी-खाद-पानी में अपनी जड़ें रोपती हुई अपना बहुत कुछ खोने और नया बहुत कुछ उस नई भूमि से लेने पाने के साथ अपने अंदर की गहराईयों में नयी ऊर्जा सृजित करती हुई नई चेतना की कोपलें विकसित करती हैं।"[xii]

किसी भी राष्ट्र के विभाजन से होने वाले तनाव, हिंसा और दहशत के चलते जनप्रवर्जन भी मजबूरी में किया हुआ विस्थापन है। भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, इजराईल, फिलिपाईनस् आदि जैसे बहुत से राष्ट्र के लोग आज भी विभाजन के दर्द को झेल रहे हैं। अपने देश से निकाले गए शरणार्थी शिविरों में जीवन बिताना पड़ रहा है।

REFERENCES

1. em.m.wikipedia.org/wiki/human
2. hindi.indiawaterportal.org
3. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यथार्थ पृष्ठ-55
4. Shabdkosh.raftaar.in/ Meaning-of-VISTHAPAN-in-Hindi
5. हिन्दी शब्दसागर, पृष्ठ सं.- 456
6. अभिनव भारती (2011-2012), सं प्रो. एम.ई जुबैरी, पृष्ठ-214
7. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यथार्थ- पृष्ठ सं -66
8. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यथार्थ- पृष्ठ सं -67
9. जनसत्ता 11 अक्टूबर- 2012 , भरत डोगरा का आलेख
10. http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/892/10/0
11. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यथार्थ- पृष्ठ सं -76
12. वर्तमान साहित्य (जनवरी-माच (2006) प्रवासी हिन्दी लेखन तथा भारतीय हिन्दी लेखन(लेख)- उषाराजे सक्सेना